Vol.6 June 2013 No.12
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो
धर्ममूलम्

A Monthly publication of
Brahmasha India Vedic
Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

छः मई को भारत भावना दिवस पर

(आओ हम अपने देश, और समाज को समर्थ बनाने की प्रतिज्ञा दोहराएँ।)

देश की माटी, देश का जल,
हवा देश की देश के फल,
सरस बनें, प्रभु सरस बनें।

देश के घर और देश के घाट,
देश के वन और देश के बाट,
सरल बनें, प्रभु सरल बनें।

देश के तन और देश के मन,
देश के घर के भाई बहन,
विमल बनें, प्रभु विमल बनें।

(भवानीप्रसाद मिश्र द्वारा रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता का रूपान्तर)

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE DONATION OF RS. 1100/- (ONE THOUSAND AND ONE HUNDRED) ONLY FROM SHRI K.N. BHASIN, C4D/11-A, JANAKPURI, NEW DELHI-110058.

DONATIONS TO THE FOUNDATION ARE ELIGIBLE FOR TAX EXEMPTION UNDER SECTION 80G OF THE I.T. ACT. 1961 VIDE NO. DIT (E) 1/3313/DELBE21670-2503210 DATED 25.03.2010

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer
Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan
Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India
Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/
2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan June 2013 Vol. 6 No.12
ज्येष्ठ-आषाढ़ 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha
India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. छः मई को भारत भावना दिवस पर *–रविन्द्रनाथ टैगोर* 2
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 7
–डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
4. 'हिन्दू' शब्द की व्युत्पति 8
–आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी
5. वीर सावरकर और आर्यसमाज 18
–डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे
6. विद्या और अविद्या, दोनों का स्वामी ईश्वर है 23
–स्वामी श्रद्धानन्द
7. बीजिंग के खेल से हमें सावधान रहना होगा 26
–विसंक
8. एक भविष्यवाणी के अनुसार भारत-चीन में 2017 तक संभावित युद्ध 28
9. माँ-बाप का दर्द 30
10. You May Escape The Law, But Not Your Karma 31
-Casey Costello
11. Cause And Effect Network 33
-Sreeram Manoj Kumar
12. भूलो न ओ३म् नाम रे 35
–प्रियवीर हेमाइना

संपादकीय

चीन के चक्रव्यूह में फँसता भारत

भारत और चीन प्राचीन काल से अति निकट पड़ोसी देश रहे हैं। इनके बीच सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध बहुत पुराने हैं। चीन और भारत लगभग एक ही समय स्वतंत्र हुए। चीन में स्वाधीनता के बाद साम्यवादी विचारधारा का प्रभाव रहा जो स्वभावतः विस्तारवादी विचारधारा है। प्रायः चीन का अपने पड़ोसी देशों के साथ सीमा संबंधी विवाद रहा है। अतः चीन का भारत, म्यॉँमार, फिलीपीन्स, विएतनाम, जापान और रूस के साथ समय-समय पर सीमावर्ती क्षेत्रों को लेकर विवाद होता रहता है।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद से चीन एशिया में अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करने के लिए प्रयत्नशील रहा है। आरंभ में एशिया और विश्व में भारत के प्रभाव को देखकर चीन ने भारत की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया। तभी पड़ोसी देशों के साथ पारस्परिक संबंधों में सद्‌भाव को बढ़ावा देने के लिए नेहरु ने पंचशील के सिद्‌धान्तों का प्रतिपादन किया था। उस समय गुटनिरपेक्ष देशों में भारत का दबदबा था। तटस्थ देशों में भारत के जवाहरलाल नेहरु के अलावा, यूगोस्लाविया के मार्शल टीटो, मिस्त्र के नासेर, इंडोनेशिया के सुकार्णो आदि प्रमुख थे। तभी चीन और भारत के संबंधों में घनिष्ठता आई और नेहरु और चाऊ-एन-लाई अच्छे मित्र बन गए। इन संबंधों का लाभ उठाकर पहले तो चीन ने तिब्बत को पूर्णरूप से चीन का क्षेत्र घोषित करा लिया। इससे हजारों की संख्या में तिब्बती शरणार्थी भारत में आ

गए जिनमें उनके धर्मगुरु दलाईलामा भी थे। भारत ने उन्हें यहाँ शरण दी। चीन को यह अच्छा नहीं लगा। इससे भारत और चीन के संबंधों में तनाव पैदा हो गया। तभी से भारत और चीन के बीच संबंधों में कटुता पैदा हो गई और उसके बाद चीन की सेना ने भारत में घुसपैठ शुरु कर दी। जब भारत की ओर से इसका प्रतिकार किया गया तो सन् 1962 में अचानक चीन ने भारत के तवांग क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया तथा असम के तेजपुर तक कब्जा कर लिया। परन्तु विश्व जनमत के विरोध को देखते हुए चीन की सेनाएँ वापस लौट गईं। इस युद्ध में भारत के हजारों सैनिक हताहत हुए। इस युद्ध के बाद से भारत-चीन संबंधों में उदासीनता की भावना रही है। यों व्यापार के क्षेत्र में अवश्य कुछ प्रगति हुई किन्तु उसमें भी चीन ही अधिक लाभ की स्थिति में रहा। जहाँ तक सीमा विवाद का संबंध है स्थिति जस की तस है। हाल ही में पहले तो चीन के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री ली के कियांग ने अपने पहले विदेश दौरे के लिए भारत को चुना, फिर न जाने क्यों चीनी सैनिकों द्वारा सीमा विवाद पैदाकर दिया गया। इसमें नए प्रधानमंत्री का यह मंतव्य तो नहीं है कि भारत के साथ सीमा विवाद का विशेष महत्व है। हुआ यों कि कुछ दिन पूर्व 15 अप्रैल को पचास चीनी सैनिक लद्दाख के दौलत-बेग-ओल्दी क्षेत्र में 19 कि.मी. तक सीमा के अंदर घुस आए और वहाँ पाँच तम्बू गाड़ दिए। उधर 300 मीटर दूर भारतीय सैनिकों ने भी डेरा डाल लिया। इसके समाधान के लिए कई फ्लैग मीटिंग हुईं। अन्ततः कूटनीतिक प्रयासों के बाद कुछ शर्तों पर दोनों ओर की सेनाएँ 15 अप्रैल की यथास्थिति बनाए रखने पर सहमत हो गईं। इसमें भारतीय क्षेत्र के चूमार इलाके से बंकर हटाने

तथा ऑबजर्वेशन पोस्ट हटाने की शर्त रखी गई। इस समझौते से चीन के प्रधानमंत्री के भारत आगमन से पूर्व की तैयारी के लिए 9 मई को भारत के विदेश मंत्री की बीजिंग की यात्रा तथा उसके बाद 19-21 मई को चीन के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा संभव होगी अन्यथा दोनों ओर से यात्रा कार्यक्रम स्थगित करना पड़ता।

इस विषय में भारत को चीन की विस्तारवादी नीति से सतर्क रहने की आवश्यकता है। यह प्रतीत होता है कि चीन एशिया में भारत के प्रभाव को कम करना और भारत के अमरीका और जापान के साथ गठजोड़ को समाप्त करना चाहता है। चीन एशिया में भारत के प्रभाव को कम करने के लिए उसे चारों ओर से घेरने की नीति पर चल रहा है। वह नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान, ईरान, म्याँमार आदि देशों से संबंधों को सुदृढ करके भारत के चारों ओर अपना प्रभाव क्षेत्र बनाना चाहता है। इसी प्रयोजन से उसने पाकिस्तान से ग्वावार और चाबहार बंदरगाह प्राप्त कर लिए हैं तथा पाक के काश्मीर अधिकृत क्षेत्र के महत्वपूर्ण स्थलों पर अपने अड्डे स्थापित कर लिए हैं। इस प्रकार भारत चीन के चक्रव्यूह में फँसता जा रहा है। इसके लिए भारत को अपने सैन्यबल और सीमा के क्षेत्र में आधारभूत ढाँचे को मजबूत बनाना होगा और सीमावर्ती क्षेत्रों में आवागमन और यातायात की सुविधाओं को बढ़ाना होगा तथा अन्य सीमावर्ती राष्ट्रों से संबंधों को सुदृढ़ करना होगा। संसार में निर्बल देश की कोई सहायता नहीं करता। सभी शक्ति संपन्न का साथ देते हैं। अतः हमें अपनी ताकत को बढ़ाना और प्रदर्शित करना होगा।

संपादक

सांख्य दर्शन

(अध्याय-1, सूत्र-67)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

शब्द प्रमाण का लक्षण बताने के बाद अब अगले सूत्र में सूत्रकार प्रमाणों के प्रतिपादन का प्रयोजन बताते हैं। सूत्र है-

उभयसिद्धिः प्रमाणात् तदुपदेशः।।67।।

अर्थ- (उभय सिद्धिः) दोनों (चेतन अचेतन) की सिद्धि होती है। (प्रमाणात्) प्रमाण से (अतः) (तदुपदेशः) उनका (प्रमाणों का) उपदेश किया है।

भावार्थ- प्रमाण से चेतन और अचेतन दोनों प्रकार के पदार्थों की सिद्धि होती है, इसलिए यहाँ प्रमाणों का उपदेश (वर्णन) किया गया है। दर्शन शास्त्र का यह सामान्य नियम है कि प्रत्येक वस्तु की यथार्थता (वास्तविक स्वरूप) का निश्चय प्रमाण के बिना संभव नहीं है। चेतन और अचेतन इन दो वर्गों में सारे विश्व को बाँटा जा सकता है। इसलिए इन दोनों की यथार्थता का निश्चय प्रमाण द्वारा किया जा सकता है। इसी प्रयोजन के लिए उनका उपदेश (कथन) किया गया है।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

विचार विथि

दुर्जनों के साथ मैत्री और प्रेम कुछ भी नहीं करना चाहिए। कोयला यदि जलता हुआ है तो स्पर्श पर जला देता है। और अगर ठंडा है तो हाथ काला कर देता है।

हितोपदेश

'हिन्दू' शब्द की व्युत्पति
(150वीं जयन्ती के अवसर पर)

-आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी

लेखक परिचय-आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी हिन्दी भाषा के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार थे। उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी का परिष्कार किया जिससे 1903 से 1931के कालखंड को द्विवेदी युग कहा जाता है। इन्होंने भारतेन्दु हरिश्चंद्र काल की भाषा को सँवारने का दायित्व सँभाला और विभिन्न बोली-बानी में बँटी हिन्दी को एकसूत्र में पिरोकर भाषा को नया संस्कार दिया। ऐसे विलक्षण विद्वान् आचार्य जी की 150वीं जयन्ती 9 मई 2013 से 9 मई 2014 मनाई जा रही है। (संपा.)

किसी-किसी का मत है कि 'हिन्दू' शब्द नदवाचक सिंधु शब्द का अपभ्रंश है और इंडस (Indus) अर्थात् सिंधु शब्द से ही अंग्रेजी शब्द (India) की उत्पत्ति हुई है। किसी-किसी का मत है कि अरबी 'हिन्दू' शब्द से अंग्रेजी शब्द 'इंडिया' निकला है। कोई-कोई पंडित 'हिंदू' शब्द की सिद्धि संस्कृत व्याकरण से करते हैं और कहते हैं कि वह हिसि+दो धातुओं से बना है और हीन अर्थात् बुरे या कुमार्गगामी लोगों को दोष या दंड देनेवाले आर्यों का नाम है। बहुत से लोग 'हिन्दू' शब्द को फारसी भाषा का शब्द मानते हैं और उसका अर्थ चोर, डाकू, राहजन, गुलाम, काला, काफिर आदि करते हैं। फारसी में हिन्दू शब्द जरूर है और अर्थ भी उसका अच्छा नहीं है। इसी से इस शब्द के अर्थ की तरफ लोगों का इतना ध्यान गया है। सिंधु से हिन्दू हो जाना या पुराने जमाने में हिन्दुओं को तुच्छ दृष्टि से देखने वाले मुसलमानों का, उनके लिए काफिर और गुलाम आदि अर्थों का वाचक शब्द प्रयोग करना, कोई विचित्र बात भी नहीं। परंतु पं. धर्मानंद महाभारती न तो इन अर्थों में से किसी को मानते हैं और न हिन्दू शब्द की आज तक प्रसिद्ध व्युत्पत्ति को कबूल करते हैं। आपने अपनी व्युत्पत्ति और पुराने अर्थ को गलत साबित करके हिन्दू शब्द की उत्पत्ति और अर्थ एक नए ही ढंग से किया है। इस विषय पर कुछ वर्ष हुए बंगला भाषा में आपने एक लेखमालिका निकाली थी। उसके

उत्तर अंश का मतलब हम यहाँ संक्षेप में देते हैं-

फारसी में हिन्दू शब्द यद्यपि रूढ़ हो गया है तथापि वह उस भाषा का नहीं है। लोगों का यह ख्याल कि फारसी का हिन्दू शब्द संस्कृत सिंधु का अपभ्रंश है, उनका केवल भ्रम है। ऐसे अनेक शब्द हैं, जो भिन्न-भिन्न भाषाओं में एक ही रूप में पाये जाते हैं यहाँ तक कि उनका अर्थ भी कहीं-कहीं एक ही है। पर वे सब भिन्न-भिन्न धातुओं से निकलते हैं। उदाहरण के लिए 'शिव' शब्द को लीजिए। संस्कृत में उसकी 'व्युत्पत्ति' तीन धातुओं से हो सकती है, पर अर्थ सबका एक ही है अर्थात् यह कल्याण या मंगल का वाचक है। यही 'शिव' शब्द यहूदी भाषा में भी है। वह अंग्रेजी अक्षरों Seeva लिखा जाता है, पर उच्चारण उसका शिव होता है। वह यहूदी भाषा में 'शू' धातु से निकलता है, जिसका अर्थ है लाल रंग। शिव नाम का यहूदियों में एक वीर भी हो गया है। अब देखिये, क्या संस्कृत का शिव यहूदियों के शिव से भिन्न नहीं? लोग समझते हैं कि संस्कृत का 'सप्ताह' शब्द और फारसी का 'हफ्ता' शब्द एकार्थवाची होने के कारण एक ही धातु से निकले हैं। यह उनका भ्रम है। हफ्ता एक ऐसी धातु से निकला है जिसका संस्कृत-सप्ताह शब्द से कोई संबंध नहीं। फारसी में (से) से, स (स्वाद), स (सीन), श (शीन) ऐसे चार वर्ण है, जिनका उच्चारण एक-दूसरे से बहुत कुछ मिलता है। अतएव सप्ताह का स हफ्ता के ह में कभी नहीं बदल सकता। हफ्ता शब्द सप्ताह का अपभ्रंश नहीं। जो कोई उसे सप्ताह का अपभ्रंश समझते हैं वे भूलते हैं।

ईसा के पाँच सौ वर्ष बाद मोहम्मद का जन्म हुआ। उनके जन्म के कोई साढ़े सात सौ वर्ष बाद मुसलमानों ने हिन्दोस्तान में पदार्पण किया। यदि 'हिन्दू' शब्द मुसलमानों का बनाया हुआ है तो उसकी उमर बारह सौ वर्ष से अधिक नहीं। परंतु पाठकों को सुनकर आश्चर्य होगा कि 'हिन्दू' शब्द ईसा के जन्म से भी कई हजार वर्ष पहले का है। तो फिर क्या वह वेद में है? नहीं। किसी शास्त्र में है? नहीं। जैन या बौद्धों के पुराने ग्रंथों में है? नहीं। फिर है कहाँ? है वह अग्निपूजक पारसियों

के धर्मग्रन्थ 'जेंदावस्ता' में। जिन पारसियों को आजकल हिन्दू लोग धर्म संबंध में बुरी दृष्टि से देखते हैं, उन्हीं के प्राचीनतम ऋषियों और विद्वान पंडितों ने हिन्दू शब्द के आदिम रूप को अपने धर्मग्रन्थ में स्थान दिया है। वह आदिम रूप हन्द् शब्द है। यहूदियों की धर्मपुस्तक 'ओल्ड टेस्टामेंट' (बाइबल के पुराने भाग) में भी 'हन्द्' शब्द पाया जाता है। अब देखना है इन दोनों ग्रंथों में से अधिक पुराना ग्रंथ कौन है?

क्रिश्चियन लोगों का कथन है कि बाइबिल का पुराना भाग क्राइस्ट से पाँच हजार वर्ष पहले का है। इसमें कोई संदेह नहीं। इसे वे पूरे तौर पर सच समझते है– "Our Zendavesta is as ancient as the creation; it is as old as the Sun or the Moon." "अर्थात् धर्मग्रंथ 'जेंदावस्ता' इतना पुराना है जितनी यह सृष्टि; वह इतना प्राचीन है जितना सूर्य या चंद्रमा।" पारसियों की यह उक्ति सच है। उसके प्रमाण–

1. यहूदियों का धर्मशास्त्र 'ओल्ड टेस्टामेंट' हिब्रू भाषा में है और पारसियों का जेंदावस्ता जेंद भाषा में। हिब्रू भाषा की अपेक्षा जेंद भाषा बहुत पुरानी है।
2. 'ओल्ड टेस्टामेंट में अनेक नए-नए स्थानों और जंगलों का नाम है। वे स्थान और जंगल जेंदावस्ता के समय में न थे।
3. हाल साहेब और मि. मलाबारी कहते हैं कि पुरानी फारसी जाति में मनु आर्ष विवाह के समान सभ्य विवाह-पद्धति प्रचलित न थी। परंतु 'ओल्ड टेस्टामेंट' में इस तरह के विवाह का वर्णन है। 'ओल्ड टेस्टामेंट के प्रचार के पूर्ववर्ती समाज में जिस प्रकार की विवाह प्रथा प्रचलित थी, उसका वर्णन 'जेंदावस्था' में है।
4. 'जेंदावस्ता' में यहूदी शब्द या यहूदी जाति का नाम नहीं है पर 'ओल्ड टेस्टामेंट' में कम से कम नौ बार पारसी जाति का जिक्र है।
5. 'बाइबल' में कई जगह लिखा है कि पारसियों ने यहूदियों को जीतकर बहुत काल तक उनके देश में राज किया, पर यहूदियों में किसी ने पारसियों को विजय नहीं किया।

6. अग्निपूजा पृथ्वी की प्राचीन जातियों की सबसे अधिक प्राचीन प्रथा है। 'ओल्ड टेस्टामेंट' के समय में अग्निपूजा बंद हो गई थी, पर जेंदावस्ता के समय में उसका खूब प्रचार था। इन प्रमाणों से सिद्ध है कि 'ओल्ड टेस्टामेंट' से 'जेंदावस्ता' पुराना ग्रंथ है।

बंगला संवत् 1906 के ज्येष्ठ की 'भारती' नामक बंगला मासिक पत्रिका में 'भारती' की संपादिका श्रीमती सरलादेवी, . बी.ए. लिखित एक प्रबंध छपा है "हिन्दू और निगर"। उसमें लिखा है। "हिन्दू शब्द संस्कृत सिंधु शब्द से उत्पन्न नहीं है।....... 'जेंदावस्ता' नामक पारसियों का पुराना धर्मग्रंथ वेदों के समय का है। उसमें हिन्दू शब्द एक बार आया है। हारोबेरेजेति (अल्बुर्ज) पहाड़ के पास पहले-पहल ऐर्यन-वयेजो (आर्य निवास) था। धीरे-धीरे अहुर्मजदा (पारसियों के परमेश्वर) ने सोलह शहर बसाए। उनमें से पंद्रहवें शहर का नाम हुआ 'हफ्तहिंदव'। वेदों में इसी को 'सप्तसिंधव' कहते है। जेंदावस्ता' में तीन-इयास्ते नामक एक पहाड़ के लिए भी एक बार हिंदव' शब्द आया है जो आजकल के हिंदुकुश पर्वत का पिता है।" व्यवहार में न आने के कारण यह मूल अर्थ धीरे-धीरे भूल गया। तब बहुत दिनों के बाद वैयाकरण लोगों ने स्यंद धातु के आगे औणादिक 'अ' प्रत्यय लगाकर, किसी तरह तोड़-मरोड़कर समुद्रार्थ-बोधक सिंधु शब्द पैदा कर दिया। यह उनकी सिर्फ कारीगरी मात्र है। यह बात बिल्कुल नई है। इसके पहले और किसी ने इसका पता नहीं लगाया।

इससे मालूम हुआ कि हिंदू शब्द यवनों की संपत्ति नहीं, उसे मुसलमानों ने नहीं बनाया। 'जेंदावस्ता' नामक अति प्राचीन और पारसियों के अति पवित्र ग्रंथ 'जेंदावस्ता' में उसका प्रयोग सबसे पहले हुआ। 'जेंदावस्ता' ग्रंथ वेदों का समसामयिक है। प्राचीन पारसी लोग अग्निहोत्री (अग्नि के उपासक) थे। आजकल के पुरातत्वज्ञ उनकी गिनती प्राचीन आर्यों में करते हैं। अभी तक आपने 'हिंदू' शब्द का सिर्फ अंकुर देखा। अब देखिए अंकुरोत्पन्न वृक्ष और उसके बाद वृक्षोत्पन्न फल।

यहूदियों का धर्मशास्त्र 'ओल्ड टेस्टामेंट 39 भागों में बँटा हुआ

है, अथवा यों कहिए कि उसमें जुदा-जुदा 39 पुस्तकें हैं। उनमें से सत्रहवीं पुस्तक का नाम है 'दि बुक ऑफ यस्थर' (The Book of Easther), इसका हिब्रू नाम है 'आजथुर'। इसके पहले अध्याय में है-

"Now it came to pass in the days of Ahasuerus, this is Ahasuerus which reigned from India even to Ethiopia, over an hundred and seven and twenty provinces- Esther, Chapter I Verse."

अर्थात् अहासुरस् राजा ने इंडिया से ईथियोपिया तक राज किया। अब इस बात का विचार करना है कि इंडिया (हिन्दोस्तान) शब्द किस अर्थ का वाचक है। याद रखिए, यहूदियों का 'ओल्ड टेस्टामेंट' ग्रंथ ईसा से पाँच हजार वर्ष पहले का है। वह हिब्रू भाषा में है। उसी के अंग्रेजी अनुवाद में 'इंडिया' शब्द किस हिब्रू शब्द का अनुवाद है। वह पूर्वोल्लिखित 'हन्द्' शब्द का भाषांतर है। हिब्रू में 'हन्द्' शब्द का अर्थ है- विक्रम, गौरव, विभव, प्रजा, शक्ति, प्रभाव इत्यादि। यह बात 'ओल्ड टेस्टामेंट' में अवतरणों से साबित की जा सकती है, परंतु उन सब प्रमाणों को देने से लेख अधिक बढ़ जाएगा। अब 'आजथुर' पुस्तक से जो वाक्य ऊपर दिया गया है, उसके अर्थ पर विचार कीजिए-आहासुरस् राजा ने हन्द् (शक्ति) से ईथियोपिया तक राज्य किया। जिस तरह अंग्रेजी में बहुधा गुण-वाचक शब्द का परिचय सिर्फ उसके गुणों के उल्लेख से होता है। अतएव 'हन्द् से ईथियोपिया तक राज्य किया' इस वाक्य का अर्थ हुआ 'हन्द्' (शक्ति विशिष्ट राज्य) से लेकर ईथियोपिया तक राज्य किया।'

यहूदी लोग ग्रीक लोगों से पुराने हैं। ग्रीस में एक ऐतिहासिक लेखक हो गया है। उसका नाम था मेगास्थनीज। उसने एक जगह लिखा है- "यहूदी लोगों ने पारसियों से ज्ञान और शिक्षा और भारतवासियों से धन और प्रभुत्व प्राप्त किया था।" यहूदियों ने भारतवर्ष में व्यापार करके बहुत धन कमाया था, यह बात यहूदियों ने अपने ही लिखे हुए इतिहास में स्वीकार की है। उसके और भी अनेक प्रमाण ग्रीस और रोम-विषयक पुस्तकों में पाए जाते हैं। यहूदी राजा दाऊद के पुत्र सालोमन

के विश्व-विख्यात मंदिर के लिए लकड़ी, चूना, पत्थर इत्यादि मसाला हिंदोस्तान से ही गया था। थराक्लूश नामक एक ग्रीक ग्रंथकार ने लिखा है, "भारतवर्ष का विक्रम और गौरव देखकर ही यहूदी लोग इस देश को हन्द् कहकर पुकारते थे।" अब देखना है कि यहूदी लोगों ने इस हन्द् शब्द को पाया कहाँ से? पाया उन्होंने पारसियों के 'जेदावस्ता' से। प्रमाण-

1. यहूदियों के देश में बहुत काल तक पारसियों ने राज्य किया। उनके राज्य काल में यहूदी अदालतों में जेंद भाषा ही बोलते थे। वे लोग 'जेंदावस्ता' पढ़ते थे। इससे पारसियों के हिंदव शब्द से यहूदी जरूर परिचित रहे होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं।

यहूदियों ने 'जेंदावस्ता' से अनेक देश, पर्वत और नदियों आदि के नाम लिये हैं, यथा-

जेंद भाषा		**हिब्रू भाषा**
तराशश् (Taurus)	-	तरश्
मोश्ज़ा	-	मोशजा
मजदाहा	-	मेशाया (Messeah)
कोशा	-	कोशा
अरदूजु	-	इयारनउ

हिब्रू भाषा कोई स्वतंत्र भाषा नहीं है। बह जेंद भाषा से उत्पन्न है। अतएव यह बात सत्य है कि जेंद भाषा के हिंदव शब्द ने ही हिब्रू भाषा में हन्द् रूप धारण किया। उसकी पुष्टि में अनेक प्रमाण दिए जा सकते हैं।

पाठक, आपने महाजनों की मुंडिया लिपि देखी है। न देखी होगी तो उसकी विशिष्टता से आप जरूर वाकिफ होंगे। उसमें आकार, इकार, उकार आदि की मात्राएँ नहीं होतीं। इसमें बाबा, बीबी, बूबू, बोबो सब एक तरह लिखे जाते हैं। अपेक्षित शब्द पढ़ने वाले अपनी बुद्धि से पढ़ लेते हैं। इसी कारण से कभी-कभी मामा की मामी, किश्ती की कुश्ती, घड़ा का घोड़ा और 'अजमेर गए' का 'आज मर गए' हो जाता है। हिब्रू भाषा भी ऐसी ही है। उसमें भी इकार, उकार आदि नहीं है। वह दाहिने हाथ की तरफ से लिखी जाती है उसकी पुत्री

अरबी और पौत्री फारसी भाषा है। इन दोनों भाषाओं में जेर, जबर और पेश आदि चिह्नों के प्रयोग से वैयाकरणों ने अकार, इकार और उकार के उच्चारण किसी प्रकार निश्चित कर लिये है, पर हिब्रू में यह बात अब तक नहीं हुई। उस वर्णमाला में सिर्फ दो ही एक स्वर हैं, सो भी अपरिस्फुट चिह्नों के द्वारा अनेक शब्दों का उच्चारण होता है। इससे क्या होता है कि बहुत स्थलों में इकार का लोप हो जाता है जैसे–

जेंद		**हिब्रू**
किरियाद्	–	करयोयद्
शिकना	–	सकना
हिशिया	–	अशय
हिज्‌रद	–	यजानुद
विरजोद्	–	वरजाद

यदि हम यह कह दें कि हिब्रू में इकार है ही नहीं तो भी अत्युक्ति न होगी। जो शब्द खास हिब्रू का नहीं है, उसमें पूरा इकार नहीं होता। उच्चारण में इकार होने से भी वह लिखा नहीं जाता। यथा–

हिब्रू उच्चारण		**हिब्रू लिखावट**
जिहोवा	–	जहोवा
इञ्‌जल	–	अञ्‌जल
इश्‌राइल	–	चश्‌रहिल
इजाया	–	भाजाया
इयाकुब	–	आकूब
मरियम	–	मरम्

अतएव जेंद शब्द हिंदव का इकार यदि हिब्रू में उड़ जाए तो आश्चर्य ही क्या है? अच्छा, इकार तो यों गया; अब यह बतलाइए कि 'हिन्दव' का 'व' कार कहाँ और किस तरह गया? सुनिए, उसका भी हम पता बतलाते हैं। हिब्रू भाषा में त, थ, द, च, छ, ड आदि अक्षरों का उच्चारण होने से व, फ और य का लोप हो जाता है। दृष्टांत–

हिब्रू शब्द	उच्चारण मे 'व' लोप
तोवा	तोहा
असथुवा	असथुहा
संदव	संद अथवा सनद्
गदव्	गद्
दाग्दब्	दाग्द्
अदावा	आदाहा

अतएव पारसियों के 'जेंदावस्ता' का पवित्र हिंदव शब्द हिब्रू भाषा में 'हन्द्' हो गया। जो कुछ यहाँ तक लिखा गया उससे यह सिद्धांत निकला कि–

1. हिंदू शब्द पहले 'जेंदावस्ता' में प्रयुक्त हुआ।
2. पारसी लोग इस शब्द के सृष्टिकर्ता हैं।
3. यहूदियों ने इसे अपनी भाषा में लेकर हन्द् कर दिया।

हिंदोस्तान से ग्रीक लोग बहुत दिनों से परिचित थे। जिस रास्ते से ग्रीक लोग हिंदुस्तान आते थे, उस रास्ते में एक पहाड़ था। कई कारणों से उन्हें उसके पास ठहरना पड़ता था। इस रास्ते का वर्णन उन्होंने आहासुरस् राजा की पुस्तक में पढ़ा था। बर्फ से ढकी हुई और बहुत ऊँची पर्वत-माला को रास्ते में देखकर ग्रीक लोगों ने अपने साथियों से इसका नाम पूछा। उन्होंने कहा इसका नाम हम नहीं जानते, पर इनके साथ एक पुरोहित भी था। उसने कहा, "मैंने सुना है कि इसके एक तरफ हन्द् देश की सीमा है और दूसरी तरफ ईथियोपिया राज्य की सीमा।" इसी ईथियोपिया राज्य का हिब्रू नाम है कुश (Cush) 'बाइबिल' (ओल्ड टेस्टामेंट) की पहली पुस्तक, जेनेसिस के दूसरे अध्याय की तेरहवीं आयत में है– "And the name of the second river is Gihon; the same is it that compasseth the whole of the Ethiopia. जहाँ पर यह आयत है उसके किनारे टीका में लिखा है कि ईथियोपिया को यहूदी लोग 'कुश' कहते थे। मूल हिब्रू में ईथियोपिया नहीं है, उसकी जगह कुश ही है। इसी 'कुश' शब्द ने भाषा में कोश (Cosh) रूप धारण किया। यह कोश शब्द चेतना-विशिष्ट पुल्लिंग है। जैसा ऊपर कहा जा चुका है, कोश ईथियोपिया राज्य का नाम है। हिब्रू भाषा की तरह ग्रीक भाषा

के व्याकरण के अनुसार भी कोश शब्द गुणवाचक है। हिब्रू भाषा में कुश या कोश शब्द का अर्थ सीमा भी होता है और पर्वत भी होता है। इसी कुश या कोश से 'को' 'कोहे' शब्द निकले हैं, जिनका अर्थ अरबी और फारसी भाषा में पर्वत था। पुराने जमाने में इस देश की पश्चिमी सीमा हिंदुकुश पर्वत था। रघु की दिग्विजय में, महाभारतोक्त गांधारी के विवाह-वर्णन में और पुराने भूगोल में इस बात का प्रमाण मिलता है कि हिंदूकुश के आस-पास भारतीय राजाओं का राज्य था, पर इसके आगे न था। इन्हीं कारणों से ग्रीक लोगों ने हन्द् देश की सीमा के अथवा हन्द् देश की सीमाज्ञापक पर्वत के अर्थ में इस पहाड़ का नाम 'हन्द्कोश' (Hankosh) रखा। यह बात युक्तिसंगत और संदेहहीन है। ग्रीक भाषा में पर्वत शब्द पुल्लिंग और चेतनावान है। अपभ्रंश होते-होते वह हन्द्कोश से 'इंडिकस' हो गया। यहीं इंडिकस अंग्रेजी भाषा में इंडिया (India) हुआ **अब देखिए जेंदवास्ता का हिंदव हिब्रू भाषा में हुआ हन्द्। हिब्रू भाषा का हन्द् ग्रीक भाषा में हुआ हन्द्कोश इंडिकस। ग्रीक भाषा का इंडिकस अंग्रेजी में हुआ है इंडिया।**

हिंदुकुश से अटक के किनारे तक जो लोग रहते हैं, वे पश्तू भाषा बोलते हैं। ये लोग फारस के आदिम निवासी है। फारसी से उनकी भाषा बहुत मिलती है। धर्मांतर ग्रहण करने के पहले ये लोग पारसियों की तरह अग्निपूजक थे। इन्हीं पश्तू बोलनेवाले भारतवासियों ने अर्थात् जेंदावस्ता' के मानने वाले अग्निसेवक पुराने पारसियों के वंशधरों ने हन्द् शब्द के आगे ह्रस्व उ प्रयोग कर, उसे हंदु के रूप में बदल दिया। पश्तू व्याकरण के अनुसार हन्द् और हिन्द् शब्द के उत्तर ह्रस्व उ प्रत्यय करने से 'युक्त' अर्थ होता है। उ प्रत्यय होने से हन्द् हन्दु हो गया। प्राचीन आर्य हिंदु जाति के गौरव, पवित्रत्व और विभव आदि को देखकर ही पश्तू बोलनेवालों ने उ प्रत्यय का प्रयोग किया था। पश्तू भाषा में हन्द् और हंदु शब्द गौरववाचक हैं।

इस प्रकार जेंदावास्ता का हिंदव शब्द् पश्तू में हिंद तक पहुँचा।

सिक्ख धर्म-प्रवर्तक गुरुनानक के सैनिक शिष्यों ने गुरुमुखी भाषा में उसे हिन्दु कर दिया। नानक के पहले यह शब्द हिंदव, सिंधव, हिन्द् और हंद तक रहा। हिंदु वंशावतंस सिक्खों ने अंत में उसे 'हिंदु' के रूप में परिवर्तित कर दिया। जो लोग कहते हैं कि हिन्दु शब्द सीमाबद्ध है, वे बड़े भी भ्रांत हैं। कहाँ फारस, कहाँ यहूदी देश, कहाँ ग्रीस, कहाँ अहासुरस् का राज्य। सब कहीं वही प्राचीन हिंदू नाम।

इस विवेचना से सिद्ध हुआ कि हिंदू शब्द का अर्थ है विक्रमशाली, प्रभावशाली आदि। सुप्रसिद्ध फरांसीसी लेखक (Jaqulliethe) ने अपने एक ग्रंथ में लिखा है– "असाधारण बल और असाधारण विद्यावत्ता के कारण पूर्वकाल में भारतवर्ष पृथ्वी की सारी जातियों का आदरपात्र था।' जिस हिंदू जाति की साधुता, वीरता, विद्या, विभव और स्वाधीनता आदि देखकर पारसी, यहूदी, ग्रीक और रोमन लोग मोहित हो गए और मुसलमान इतिहास-लेखकों ने जिस देश को स्वर्ग-भूमि कहकर उल्लेख किया, क्या उसी देश के रहने वाले काफिर, काले, गुलाम, कहे जा सकते हैं? यह बात क्या कभी विश्वासयोग्य मानी जा सकती है कि हिन्दू शब्द कदर्थबोधक हो। हिंदू शब्द गौरव, गरिमा, विक्रम और वीरत्व का व्यंजक है। तो कहिए, क्या आप अब हिंदू नाम छोड़ना चाहते हैं? जो ज्ञान, विज्ञान और सर्वशास्त्रीय तत्वों का आदर्श है, जो ब्रह्म-विद्या का आकर है, वही पवित्र और प्रशस्त हिंदू नाम हमारे मस्तक की मणि है, हमारे देश का गौरव है, हमारी जाति के महत्व का व्यंजक है और वही इस अधःपतित, अर्द्धमृत, भारतीय आर्य जाति के जातीय जीवन का पुनरुद्दीपक है। हिंदू शब्द एक ऐसा नाम है, जिसके उच्चारण से भग्न हृदय में फिर आशा का संचार हो जाता है; क्षीण देह में बल-स्रोत फिर वेग से बहने लगता है; अंतःकरण में जातीय गौरव का फिर अभ्युदय हो जाता है और मन में ब्रह्मानंद का अनुभव होने लगता है। तब हिंदू नाम हम छोड़े क्यों?

वीर सावरकर और आर्यसमाज

–डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे
भोसले इलायट
भोसले नगर, पुणे–499001(महा.)

भारतीय स्वतन्त्रता–संग्राम के अध्येता, बुद्धिजीवी वीर सावरकर के व्यक्तित्व और कृतित्व से भलीभाँति परिचित हैं। वीर सावरकर स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत, हिन्दूराष्ट्र–भक्ति के स्फूर्तिस्थान, निस्पृह, स्पष्ट वक्ता, असीम त्यागी, जाति–पांति अस्पृश्यता, सामाजिक, रूढ़ियों के विरोधी क्रान्तिकारी षोडश कला संपन्न योगीराज थे।

मुम्बई में वीर सावरकर साहित्य अध्ययन मंडल नाम की एक संस्था है। यह संस्था हर साल त्रिदिवसीय सम्मेलन का आयोजन करती है। सावरकर की स्मृति में, यह संस्था स्वतंत्रता वीर विशेषांक भी प्रकाशित करती है। सम्मेलन और पत्रिका के माध्यम से वीर सावरकर के व्यक्तित्व और कृतित्व के हर पहलू पर प्रकाश डाला जाता है। वीर सावरकर के विचारों की ओर नवयुवकों को आकर्षित कर उनमें राष्ट्रभक्ति की ज्योति प्रज्वलित करने का प्रयास यह संस्था करती है। इन पंक्तियों का लेखक भी इस संस्था से जुड़ा हुआ है। सावरकरजी स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज के आन्दोलन से और स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थों और कार्य से परिचित थे। इतना ही नहीं, उन्होंने आर्यसमाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया था। 1957 ई. में दिल्ली में आयोजित 1857 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम शताब्दी महोत्सव में वे सम्मिलित हुए थे। वीर सावरकर ने दयानन्द और आर्यसमाज के कार्य का स्मरण करते हुए अपने भाषण में कहा था "स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के सम्बन्ध में मेरी श्रद्धा किसी से छिपी हुई नहीं है। स्वामी दयानन्द का 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ पढ़कर मुझे सन्तोष होता है और जिस स्वाधीनता के प्रति में कृतसंकल्प हूँ उसमें दयानन्द का 'सत्यार्थप्रकाश' सहायक रहा है। इसलिए मैं स्वामीजी का पक्का शिष्य हूँ। इस समय आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है,

जो राजनीतिक स्वार्थों से परे है। इसी में देश के कल्याण की क्षमता है। (संदर्भ आर्यसमाज का इतिहास सातवाँ भाग पृ. 273-274 लेखक सत्यकेतु विद्यालंकार)

स्वामी दयानन्द के शिष्य सावरकर का जन्म मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण और वीर शिवाजी के प्रति अपार श्रद्धावान परिवार में नासिक (महा.) के निकट भगुर ग्राम में 28/5/1883 को हुआ था। उनके जन्म के पश्चात् कुछ ही महीनों बाद दि. 30 अक्टूबर 1883 को स्वामी दयानन्द की मृत्यु हुई थी। सावरकर की प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षा भगुर तथा पुणे में हुई। एक वास्तविकता को यहाँ स्पष्ट करना आवश्यक है स्वामी दयानन्द के जीवन में महाराष्ट्र के जिन-जिन शहरों की चर्चा आती है - उनमें सर्वप्रथम नासिक, उसके पश्चात् मुम्बई, पुणे, सतारा शहर हैं। नासिक शहर में स्वामी दयानंद 16 अक्टूबर से 19 अक्टूबर 1874 चार दिन तक रहे। उनके वहाँ दो प्रवचन भी हुए। 1874-1882 तक महाराष्ट्र की यात्रा में दयानंद के विचारों का गहन प्रभाव पड़ा। स्वामी दयानंद ने मुम्बई में 10 अप्रैल 1875 को आर्यसमाज की स्थापना की थी।

सावरकर का लंदन प्रवास 1806 से प्रारंभ होता है। वे अपने शिक्षाकाल में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के केन्द्र- भारत भवन (India House) से समीप से जुड़े हुए थे। उस समय सावरकर-दयानन्द के एक शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा के सान्निध्य में आये। उस समय स्वामी दयानन्द और श्यामजी कृष्ण वर्मा के बीच पत्र व्यवहार भी हुआ करता था। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से ही श्याम जी कृष्ण क्रान्तिकारी बने। विदेश में रहते हुए उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन चलाया था। वीर सावरकर भी इसी आन्दोलन से जुड़े रहे। यहाँ सावरकर निश्चित रूप से दयानन्द तथा उनके सुदेश, स्वदेश की विचारधारा से परिचित हुए थे। 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वामी दयानन्द की भूमिका से भलीभाँति परिचित हुए थे। इसी समय सावरकर ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम ग्रन्थ की

रचना की थी। यह ग्रन्थ स्वतंत्रता संग्राम की धधकती ज्वाला को अभिव्यक्त करता है और भावी पीढी को प्रेरणा देता है। वीर सावरकर 1906 से 1911 तक लंदन में रहे। यह संघर्ष भारत के स्वतंत्र होने तक चलता रहा। सावरकर के इस संघर्ष काल की भूमिका में दयानंद तथा उनके शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सावरकर ने अपने ग्रन्थ तेजस्वी तारे में श्यामजी कृष्ण वर्मा का बड़े आदर से उल्लेख करते हुए लिखा है- मंदिर के शिखर पर कलश को तो सब लोग देखते हैं परन्तु मन्दिर की नींव में पड़े हुए पत्थर की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता।

सावरकर के जीवन का दूसरा काल 1911 से 1929 तक का था जो अंग्रेजों की सेल्युलर कारागृह (अन्दमान) में अनेक यातनाओं के सहते हुए बीता। कारागृह में वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचारकार्य में जुटे रहे। उनकी अतीव इच्छा थी कि भारत की संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी ही देश की भाषा हो और देवनागरी इसकी लिपि हो। क्योंकि हिन्दी भाषा में ही देश को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता है। इसी दौरान 1915 में, हरिद्वार के कुम्भ मेले के अवसर पर आर्यसमाज के कट्टर कार्यकर्ता - लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानंद तथा कुछ हिन्दुत्व प्रेमी सज्जनों के प्रयास से विधिवत हिन्दू महासभा की स्थापना हुई। बाद में लालालाजपत राय तथा स्वामी श्रद्धानंद हिन्दू महासभा के सम्मेलनों के अध्यक्ष बने। (संदर्भ वीर सावरकर दर्शन लेख द. स. हर्षे पृ. 3) 1937 से 1942 तक वीर सावरकर हिन्दूमहासभा के अध्यक्ष रहे। इस काल के सम्मेलनों में सावरकर के भाषणों का ऐतिहासिक महत्व है। उनके भाषण हिन्दू राष्ट्रदर्शन ग्रन्थ के रूप में (मराठी, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में) प्रकाशित हुए। आर्यसमाज ने इस ग्रन्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। (संदर्भ सावरकर दर्शन ते. द. स. हर्षे पृ 9) इसका अभिप्राय यही है कि दयानन्द के वैदिक विचारों से महाराष्ट्र प्रभावित रहा परिणामतः महाराष्ट्र के विभिन्न शहरों में आर्यसमाजों की स्थापना हुई। मुम्बई के अतिरिक्त नासिक

में पं. वैद्यनाथ जी शास्त्री के प्रयास से 1926 में आर्यसमाज की स्थापना हुई।

वीर सावरकर के रत्नागिरी प्रवास (1929 से 1934) के दौरान अब्दुल रसीद नामक पागल मुसलमान ने 23 दिसम्बर 1926 को दिल्ली में स्वामी श्रद्धानंद की हत्या कर दी। अब्दुल रसीद के किये हुए घृणित कार्य के कारण उसे फाँसी देने की बात आयी तो म. गाँधी ने उसकी फाँसी का विरोध किया। सावरकर ने म. गाँधी का विरोध करते हुए श्रद्धानंद की शोक सभा में कहा था कि स्वामी श्रद्धानंद की हत्या बड़ी दुःखदायी घटना है, पर इससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। उनका शुद्धीकरण का कार्य कभी थमेगा नहीं। एक श्रद्धानंद हमारे बीच से चला गया, पर उनके खून की एक-एक बूँद से हजारों श्रद्धानंद जन्म लेंगे इतना कहकर वे रुके नहीं, श्रद्धानंद के नाम से श्रद्धानन्द साप्ताहिक पत्रिका उन्होंने प्रकाशित करना प्रारंभ किया। श्रद्धानन्द के प्रथम अंक में ही उन्होंने एक लेख में श्रद्धानन्द की हत्या और गाँधी की अल्पसंख्यक तुष्टीकरण नीति का विरोध किया। (संदर्भ. - सावरकर दर्शन - ले द. हर्षे पृ. 64)

1943 में, सिन्ध प्रान्त में मुस्लिम लीग की सत्ता थी। मुस्लिम लीग ने स्वामी दयानन्द की अमरकृति सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबंध लगाया। उस समय सावरकर मुस्लिम लीग के विरोध में खड़े हुए और प्रतिबंध का विरोध किया।

संपूर्ण अखंड भारत स्वतंत्र हो और भारत देश की सभी रियासतें भारत देश में शामिल हों। यह सावरकर की इच्छा थी। भारत के मध्य हैदराबाद में निजाम मीर उस्मान अली खाँ की रियासत थी। इस रियासत में 1892 में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। सारी रियासत में देखते-देखते आर्यसमाज संस्था की अनेक शाखाएँ खुलीं और वैदिक धर्म का प्रचार कार्य बड़ी धूमधाम से होने लगा। 1937-1938 ये दो वर्ष आर्यसमाज की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इसी समय निजाम ने हिंदू धर्म की सब गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा

दिया। आर्यसमाज ने अहिंसा मार्ग स्वीकारते हुए निजाम की नीति का विरोध किया। दि. 25, 26, 27 दिसम्बर 1938 को, आर्यसमाज ने नारायण स्वामी (दिल्ली), स्वामी स्वतंत्रा नंद के नेतृत्व में, सोलापुर में आर्यमहासम्मेलन आयोजित किया था। सम्मेलन के अध्यक्ष थे श्री पी. वी. अणे और वीर सावरकर एक प्रमुख अतिथि के रूप में इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे। आर्यसमाज ने हिन्दू धर्म के विरोध में सत्याग्रह का ऐलान किया। उस समय स्टेट कांग्रेस ने भी इस सत्याग्रह का समर्थन किया। बाद में कांग्रेस को म. गाँधी के आदेशानुसार सत्याग्रह से पीछे हटना पड़ा। अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की राजनीति इसका मुख्य कारण था। गाँधी जी की राजनीति को सावरकर ने ठीक तरह से पहचाना था। सावरकर ने कहा हिन्दू महासभा भी इस सत्याग्रह में सम्मिलित होगी। मैं आर्य समाज का सदस्य नहीं हूँ पर हिन्दू अवश्य हूँ। हिन्दू आर्य ही होता है। मैं आर्य ही हूँ। आर्यसमाज और हिन्दू महासभा के 5000 सत्याग्रही 17 जत्थों में सत्याग्रह में सम्मिलित हुए। अन्त में निजाम को आर्यसत्याग्रह के सम्मुख झुकना पड़ा। आर्यजनों की सभी माँगें स्वीकृत हुईं। यह आर्यसमाज की विजय थी। इसमें सावरकर जी का योगदान भी महत्वूपर्ण था। (संदर्भ-सावरकरदर्शन ले. द. स. हर्षे पृ.29 पुनः राजकारण पृ. 5)

दयानंद के राष्ट्रवाद और वीर सावरकर के 'हिन्दुत्ववाद' में काफी समानता है। दयानन्द का राष्ट्रवाद समूचे भारत की स्वतंत्रता, स्वधर्म, सुशासन में था तो वीर सावरकर का हिन्दुत्ववाद राष्ट्रनिष्ठा और अखंड भारत में था। वीर सावरकर ने भारतमाता की स्तुति में लिखा था-

"हम पुत्र हैं भारतमाता के। चरणों में शीश नमाऊँ।
भक्ति-भेंट तेरे चरणों में चढाऊँ।
माथे पर तू हो चन्दन छाती पर तू हो माला।।
जिह्वा पर गीत तू ही, मैं तेरे गीत गाऊँ।।

वीर सावरकर

विद्या और अविद्या, दोनों का स्वामी ईश्वर है

-स्वामी श्रद्धानन्द

द्वे अक्षरे ब्रह्मपरे त्वनन्ते
विद्याविद्ये निहिते यत्र गूढे।
क्षरं त्वविद्या ह्यमृतं तु विद्या
विद्याविद्ये ईशते यस्तु सोऽन्यः।

श्वेताश्वतर, 5.1

अर्थ- **(द्वे अक्षरे)** दोनों अविनाशी नित्य हैं; **(ब्रह्मपरे)** दोनों ब्रह्मपरक, ईश्वर से सम्बन्धित हैं; **(अनन्ते तु)** दोनों अनन्त हैं; **(विद्याविद्ये यत्र गूढे निहिते)** वे विद्या और अविद्या-ब्रह्म ज्ञान और पदार्थ ज्ञान-जिस गूढ़ अर्थात् रहस्यमय छिपे हुए तत्व में रखे गए हैं; इनमें से **(अविद्या तु क्षरं)** अविद्या तो क्षीण होने वाली, नष्ट हो जाने वाली अर्थात् अनित्य है; **(विद्या तु अमृतं)** जब कि विद्या अमर या अविनाशी है; उन **(विद्याविद्ये)** विद्या और अविद्या, दोनों पर ही **(यः ईशते)** जो शासन करता है, उन्हें अपने वश में रखता है, **(स तु अन्यः)** वह कोई और ही है।

मनन- जिस अविनाशी तथा सर्वव्यापक परब्रह्म के अन्दर ब्रह्मविद्या अवस्था में उपस्थित हैं और जो ब्रह्मविद्या और पदार्थ विद्या दोनों का स्वामी है, वह और ही है। अविद्या और पदार्थ विद्या दोनों नश्वर हैं, परंतु विद्या निश्चयपूर्वक ही मोक्ष देने वाली है। संसार और परमार्थ दोनों ही विद्याओं का प्रकाश हम देखते हैं, दूसरी ओर सांसारिक पदार्थों को तुच्छ समझ कर परमार्थ की प्राप्ति में लगे हुए सूक्ष्म विचारों को समझने की शक्ति रखने वाले दिखाई देते हैं। क्या मनुष्यों की जात में भेद है? क्या जीवात्माओं की हस्ती कई प्रकार की है? प्रत्यक्ष दो विरुद्ध तरीकों पर मानवीय बुद्धियों को काम करते देख कर ऐसा ही भ्रम होता है, परन्तु निःसन्देह ऐसा नहीं है। स्थूल दृष्टि में सांसारिक विद्या विरुद्ध काम करती हुई दिखाई देती

है। परन्तु वास्तव में वह ब्रह्म विद्या की सहायक क्यों न हो जबकि उसी ब्रह्म के अन्दर से दोनों का प्रकाश हुआ है जो ब्रह्म अद्वितीय तथा सर्वव्यापक है? अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान का प्रकाश परमात्मा से हुआ है। यदि नहीं हुआ, तो हे मनुष्य, बतला, किस जगह से उनका प्रकाश हुआ है? क्या तेरे अन्दर से विद्या प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना पड़ता है? आँखों को देखने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता? कान को स्वयं सुनना नहीं पड़ता? जिह्वा को स्वाद लेने के लिए सिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ती? रंगों में भेद करने, शब्दों में भेद जानने और स्वादों के सूक्ष्म भेदों को समझने के लिए भी शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। मनुष्य समाज की हर एक पीढ़ी अपनी से पहली पीढ़ी से शिक्षा प्राप्त करके ज्ञान में उन्नति करती चली आई है; इसलिए इसमें सन्देह नहीं कि विद्या मनुष्य के अन्दर स्वाभाविक तौर पर नहीं होती, अपितु कहीं बाहर से आती है। वह बाहर कौन-सा स्थान है जहाँ से विद्या आती है? मनुष्य के अन्दर से निकलती नहीं (क्योंकि मनुष्य के अन्दर ज्ञान प्राप्त करने और बाहर से अन्दर लाने का केवल साधन कोटि है), जड़ प्रकृति के अन्दर वह भी नहीं। फिर सिवाय इसके कि उस परम पुरुष से प्रकाश हो जिसने सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र और आकाश को वर्तमान रूप दिया और कहाँ से विद्या का प्रकाश हो सकता है? परन्तु विद्या की कोई स्वतंत्र सत्ता है? क्या विशेष द्रव्य है? कदाचित् नहीं; अपितु परमात्मा के अन्दर उपस्थित है। संसार तथा परमार्थ दोनों का भण्डार परमात्मा है।

वह उनसे बिल्कुल पृथक् है क्योंकि ये दोनों उसके गुण हैं। फिर क्या दोनों से मानवीय जीवन का उद्देश्य पूर्ण हो सकता है? ऋषि उत्तर देते हैं कि हो तो सकता है परन्तु केवल एक, अर्थात् अविद्या जो कि इसका वास्तविक अभिप्राय है। फिर क्या सांसारिक विद्याओं से पूर्ण बचाव करना चाहिए? कदाचित् नहीं। सब सांसारिक विद्याओं को बड़ी अच्छी तरह प्राप्त करना

चाहिए। इसलिए नहीं कि इससे सीधे मुक्ति मिल सकती है, बल्कि इसलिए कि वह भी ब्रह्म विद्या तक मनुष्य को पहुँचाने के लिए एक साधन है। पदार्थ और सांसारिक अविद्या का प्रकाश भी परमात्मा से ही होता है, परन्तु उससे उन सांसारिक पदार्थों का ज्ञान होता है जो कि नाशवान् है। आग, पानी, हवा, मिट्टी और आकाश ये नाशवान् हैं। इनमें जो भिन्न-भिन्न सूरतें बन रही हैं, वे एक दिन बिगड़ जाएँगी। इनकी स्थिरता नहीं है। जब इन वस्तुओं की ही स्थिरता नहीं तो इनकी विद्याओं की कैसे स्थिरता हो सकती है? इसलिए सांसारिक प्रत्येक वस्तु नश्वर है। नश्वर पदार्थ से प्रेम करना बुद्धिमानों का काम नहीं। शरीर सब नश्वर हैं। इसलिए जो मनुष्य शरीर के साथ प्रेम करते हैं, उन्हें बड़े-बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं। जीवात्मा अविनाशी है, इसलिए जिसने आत्मा के साथ प्रेम लगाया उसे कष्ट नहीं हुआ।क्या शरीर की स्वस्थता के बिना प्राणायाम कर सकते हैं? जिस तरह शरीर के नश्वर होते हुए भी उसे आत्मा की उन्नति का एक साधन बना सकते हैं, उसी तरह सांसारिक विद्याएँ यद्यपि सांसारिक वस्तुओं की तरह नाशवान् है तो भी उन्हें ब्रह्म विद्या की प्राप्ति का साधन बना सकते हैं और उस ब्रह्म विद्या की प्राप्ति पर उनका स्वयं नाश हो जाता है।

प्रिय पाठकगण! सांसारिक विद्या बड़ी मोहिनी मूर्ति धारण कर तुम्हारे सामने आती है। उसके अन्दर मति फँसने का बड़ा भय है। उसकी चमक-दमक बड़ी नजर आती है। परन्तु उसके अन्दर मत फँसो। जो तुम्हें अपने उद्देश्य में चलने के लिए एक साधन के तौर पर दी गई है, जो तुम्हारे अधीन की गई है, इस सांसारिक विद्या के दास बन कर अपने असली उद्देश्य को नष्ट न करो।

ॐ

बीजिंग के खेल से हमें सावधान रहना होगा

-विसंक

प्रशांत महासागर से लेकर फारस की खाड़ी तक दूर-दराज इलाकों में सैनिक चौकियाँ बनाने की चीन की नीति 'मोतियों के हार' के दायरे में आने वाले देशों को, बीजिंग की नजदीकियों की दमघोंटू नीति का सबसे बड़ा निशाना भारत को बनाया जा रहा है और उसके चारों ओर हो रही घटनाओं में ही इस महान साजिश के मकसद को पड़ोसी पाकिस्तान की रोजमर्रा की घटनाओं में स्पष्ट देखा जा सकता है। इस्लामाबाद के इस बारहमासी दोस्त ने भारत में जानलेवा हमलों में लिप्त लश्कर-ए-तैयबा के एक कार्यकर्ता के खिलाफ प्रतिबंधों के बारे में वीटों का इस्तेमाल करके अपने पत्ते खोल दिये हैं। पाकिस्तान आर्मी इंटर सर्विसेज इंटैलिजेंस द्वारा खड़ा किया गया लश्कर-ए-तैयबा, अलकायदा-तालिबान, यूनाइटेड जिहाद काउंसिल गठजोड़ के मकड़जाल की मकड़ियों में से एक है। जाहिर है कि इस सिद्धान्त पर अमल करते हुए कि जहरीले वायरल के अंश की पहचान से उसकी जड़ तक पहुँचा जा सकता है। परस्पर आधारित संबंध के इस क्षेत्र के साथ-साथ दुनिया के लिए भी दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। बीजिंग के लिए आईएसआई तो सुपारी लेने वाला फरमाबरदार संगठन है। जम्मू-कश्मीर, बंग्लादेश और नेपाल में अपने नेटवर्क के जरिए, आईएसआई चीन की ओर से भारत के खिलाफ कार्रवाई चलाता है और हाल के सालों में पाकिस्तान की ओर से की जा रही कार्रवाइयों को रोकने के लिए भारत पर हिमालय के उस पार से सैन्य दबाव बढ़ता जा रहा है। चीन ने लद्दाख क्षेत्र में 15-20 किलोमीटर तक घुसकर पाँच तंबू गाड़ दिए। अभी बातचीत से हल निकलता दिखाई नहीं दे रहा है। इधर अरुणाचल पर दावे, दिन-प्रतिदिन तेज होते जा रहे हैं और हिमालय के पार मध्यवर्ती सेक्टर अक्सई चीन में चीनी गश्ती दलों के तेवर तीखे होते जा रहे हैं। इस खुल्लमखुल्ला साजिश के बारे में भारत की प्रतिक्रिया ढीली रही है, लेकिन अब वह हिमालय के आसपास अपनी सुरक्षा को मजबूत करने का सूझबूझ से प्रयास कर रहा है। नई माउंटेन ब्रिगेड बनाई जायेंगी और उन्हें सेना में शामिल किया

जायेगा तथा तेजपुर में सुखोई बमवर्षक विमानों की तैनाती से संकेत जाता है कि भारत कार्रवाई से एक बड़े दायरे में काफी नुकसान पहुँचा सकता है। यह एक समझदारी-भरा कदम है, क्योंकि इससे कारगिल जैसी स्थितियों में अत्यंत दक्ष और बहादुर पर्वतीय योद्धाओं को संकटग्रस्त सेक्टर में भेजने से रोकने की चीन की साजिश को नाकाम बनाया जा सकता है। इससे फौजों को दूसरी जगहों पर तैनात करने की मजबूरी से मुक्ति मिल जायेगी और अगर चीन का इरादा कुछ गलत हुआ, तो उससे निपटने के लिए फौजें वहाँ पर उपलब्ध हो जायेंगी। भारत-चीन के रुख में आए हल्के से बदलाव में तिब्बत के सवाल पर भारत के रुख में हल्के से परिवर्तन के संकेत मिलते हैं। 1954 में, भारत ने तिब्बत को चीन का एक स्वायत्त प्रदेश घोषित करके अपने दूसरे विकल्प बंद कर दिए थे, लेकिन अब उसमें बदलाव के संकेत दिखाई देते हैं। ऐसी भावना जोर पकड़ती जा रही है कि ब्रिटिश दासता से मुक्ति मिलने के बाद से ही हमारे उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में नागाओं, मिजो, उल्फा, हूजी आदि के विद्रोह के जरिए भारत को दी गई परेशानियों का बदला चुकाने का वक्त आ गया।

अब यह खुलासा होने लगा है कि पिछले दशकों में उत्तर-पूर्व या जम्मू-कश्मीर या पंजाब या दूसरे स्थानों पर, भारतीयों के खिलाफ किए गए आतंकवादी अपराधों में चीन के प्रतिनिधि और भागीदार, पाकिस्तान ने आतंकवादियों को शह दी है। कभी कोई युद्ध न जीतने वाली पाकिस्तानी आर्मी को अपने घर में पैदा हुए आतंकावादियों से लड़ने के लिए डालरों से खरीद लिया गया। जनरल परवेज मुशर्रफ ने बड़ी चतुराई भरा काम किया। उसने अमेरिका से आंतक के खिलाफ लड़ाई के लिए डालर वसूले, जिसमें उन्हें बमबारी करके पाषाण युग में पहुँचा देने की धमकी के आगे मजबूर होकर भाग लेना पड़ा। पाकिस्तान की आईएसआई अभी भी अपने हिसाब से अपने लक्ष्य तय कर रही, लेकिन बाद की बुद्धि के लिहाज से चतुर जिहादी तत्वों से भरी हुई पाकिस्तानी वायुसेना के एफ-16 से अधिक अचूक प्रिडेटर्स से हमलों की कमियों को पूरा कर रही है।

एक भविष्यवाणी के अनुसार भारत–चीन में 2017 तक संभावित युद्ध?

चीन भारत की नौसेना और वायुसेना के वर्चस्व को तोड़ने की तैयारी में

भारतीय सेना के विशेषज्ञों को आशंका है कि परमाणु शक्ति सम्पन्न चीन और भारत के बीच 2017 तक युद्ध हो सकता है। उन्होंने ये अनुमान चीन द्वारा अपनी सैन्य ताकत बढ़ाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों और उसके व्यवहार के आधार पर लगाए हैं। एक गुप्त सैन्य अभ्यास डिवाइन मैट्रिक्स में भारतीय सैनिकों की चीन के साथ युद्ध की स्थिति नजर आ रही है।

अंग्रेजी दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स ने भारतीय सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी के हवाले से कहा है कि चीन भारतीय उपमहाद्वीप में खुद को इकलौती ताकत बनाने का प्रयास कर रहा है और सम्भव है कि इस कारण चीन के साथ युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो। भारतीय सेना ने जो खाका तैयार किया है उसके तहत चीन भारत को शिकस्त देने के लिए सूचना युद्ध का सहारा लेगा। इससे पहले अमेरिका रक्षा विभाग पेंटागन की ओर से जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि चीन अपनी सेना को हर संभव हथियार उपलब्ध कराने की दिशा में सक्रिय है। जिसका इस्तेमाल किसी भी नौसेना और वायुसेना का वर्चस्व तोड़ने के लिए किया जा सकता है। इससे इस क्षेत्र का संतुलन बिगड़ेगा।

चीन हाल के वर्षों में भारत की अमेरिका से बढ़ती नजदीकियों के कारण चिंतित हैं अमेरिका के साथ भारत के

असैन्य परमाणु सहयोग करार को लेकर चीनी अधिकारियों की प्रतिक्रियाएँ अच्छी नहीं रही हैं। लेकिन विशेषज्ञ याद दिलाते हैं कि खुद चीन भारत को कूटनीतिक या आर्थिक नुकसान पहुँचाने का कोई मौका नहीं छोड़ता। पाकिस्तान को परमाणु बम बनाने की हर तरह की सुविधाएँ उपलब्ध कराने और अरब सागर तथा खाड़ी में पाकिस्तान के साथ नौसैनिक गठजोड़ बढ़ाने के पीछे भी उसका असली इरादा भारत के लिए मुसीबतें पैदा करना है।

नेपाल और बांग्लादेश के साथ अपने रिश्तों के द्वारा भी चीन एशिया में भारत की स्थिति को कमजोर करना चाहता है। रक्षा विशेषज्ञों को आशंका है कि इन देशों में वह भारत विरोधी आतंकवादी संगठनों को शह देता है।

आपसी भरोसा नहीं तो कुछ नहीं।

पड़ोसी और ताकतवर देश होने के नाते चीन ने प्रधानमंत्री का अपने सबसे पहले विदेश दौरे पर भारत आना एक पॉजिटिव संकेत है, यह दौरा विवादों में न उलझा हुआ दिखे, इसीलिए भारतीय नेतृत्व लद्दाख में चीनी घुसपैठ को बातचीत से हल करने पर जोर दे रहा था। लेकिन भारतीय जनमानस को झकझोरने वाले घुसपैठ जैसे संवेदनशील मसलों को यदि नजरअंदाज किया गया तो चीन के साथ दोस्ती की भारत की सारी कोशिशों के प्रति आम लोगों में भरोसा नहीं पैदा होगा। चीन के साथ दोस्ती भारत के लिए भी अहम है और यदि यह बराबरी के आधार पर विकसित होती है तो इसका विश्व राजनीति में भारी असर होगा। यह उद्देश्य भारत और चीन के बीच सही मायनों में परस्पर भरोसे के साथ होने वाली दोस्ती से ही हासिल हो सकता है।

झाँसा, निकाह, तलाक और माँ-बाप का दर्द

मुसलमान युवकों द्वारा हिन्दू युवतियों के साथ बहुधा विवादास्पद तरीकों से निकाह करने का सिलसिला वर्षों से चल रहा है, किन्तु पिछले चार-पाँच वर्षों से ऐसी घटनाएँ ज्यादा हो रही हैं। ये घटनाएँ सबसे ज्यादा उत्तरप्रदेश के मेरठ, सहारनपुर, लखनऊ, बहराइच, मुरादाबाद, बरेली, कानपुर, अलीगढ़, बागपत, मुजफ्फरनगर, आजमगढ़ आदि जिलों और पाकिस्तान में हो रही हैं। कहा जाता है कि ऐसे मुस्लिम युवकों का केन्द्र मेरठ है। यहीं से उन्हें संचालित किया जाता है। सूत्रों के अनुसार एक साजिश के तहत कुछ संगठन मुस्लिम युवकों को हिन्दू युवतियों से मेल-जोल बढ़ाने के लिए हर तरह की सलाह और मदद देते हैं। लड़कियों का पहले मतान्तरण किया जाता है और फिर निकाह। जब परिवार वाले अपनी लड़की को वापस बुलाने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाते हैं तो अधिकांश लड़कियाँ अदालत में बयान देती हैं कि उन्होंने मतान्तरण कर लिया है और अब वह अपने शौहर के साथ रहना चाहती हैं। कुछ मामलों में तो यह भी देखा जाता है कि यदि कोई लड़की कुछ दिन बाद माँ-बाप के पास वापस आना भी चाहती है, तो माँ-बाप उसे वापस अपने साथ रखने को तैयार नहीं होते। बमुश्किल एक-दो साल कोई लड़की अपने कथित 'शौहर' के साथ रह पाती है। फिर उसे तलाक दे दिया जाता है या दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाता है अथवा कहीं और भेज दिया जाता है। लड़की द्वारा कहीं जाने या घर छोड़ने से मना करने पर उसकी हत्या की भी कोशिश की जाती है। लखनऊ निवासी अजय पाण्डे (परिवर्तित नाम) की पुत्री मनोरमा पाण्डे (परिवर्तित नाम) के साथ भी ऐसा ही हुआ। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी रहे अजय पाण्डे की पुत्री मनोरमा एम.एस.सी. में पढ़ती थी। कालेज कार से आती-जाती थी। इसी दौरान लखनऊ के ही एक मुस्लिम युवक, जो मोटर मैकेनिक था, के झाँसे में वह आ गई। दोनों का निकाह हो गया। लड़की वाले न्यायालय तक गए, किन्तु वह वापस नहीं आई। अब उसे तलाक दे दिया गया है और वह लखनऊ की सड़कों पर पागल-सी घूमती रहती है। बेटी की हालत देखकर उसके माता-पिता की अश्रुधारा निरन्तर बहती रहती है। बेटे राकेश और बहू जयन्ती के द्वारा बार-बार समझाने पर वे दोनों 24 घंटे में किसी तरह एक बार खाना खाते हैं। राकेश कहते हैं, मेरा तो घर ही उजड़ गया है। सुबह माता-पिता को बहुत समझा-बुझाकर दफ्तर जाता हूँ, फिर भी मुझे डर लगा रहता है कि पता नहीं कब क्या हो जाएगा। पिताजी कई बार आत्महत्या का भी प्रयास कर चुके हैं।' पुराना किला (लखनऊ) निवासी निर्मलानाथ बहल भी एक ऐसे ही पिता हैं। इन्होंने अपने घर के बाहर एक मुस्लिम युवक अशफाक को एक तख्त लगाकर कपड़े प्रेस करने की अनुमति दी थी। किन्तु कुछ दिन बाद ही अशफाक बी.ए. में पढ़ रही उनकी बेटी रजनी बहल को लेकर भाग गया। दिल्ली आकर उसने भी उसका मतान्तरण कराया और फिर निकाह। मतान्तरण के बाद रजनी बहल रजिया खातून के नाम से जानी जाती है। आए दिन होने वाली तलाक की घटनाओं से रजनी के पिता और भाई भी चिन्तित हैं। बेटी के गम में माँ पहले ही स्वर्ग सिधार चुकी हैं।

You May Escape The Law, But Not Your Karma

-Casey Costello

We reap what we sow. If things do not catch up with us in this lifetime, rest assured they would do so, in another. Karma has become a well-used word these days, but understand and remember it? The first step to change is to understand karma. Any good you do in this lifetime will come back to you. If you are spiritually attuned, the good will return to you in this life. If not, then you will experience good in the next life.

Thought is also energy - be very careful about negative thoughts and whom you project them onto! Think before you do something mean to someone else, even when they have done something mean to you! It could become a continual circle that you and the other person get stuck in, for many lifetimes. The saying 'turn the other cheek' begins to have a real energetic meaning. So, in fact, if someone does something negative to you, do not react but let it go......... so that it remains their karma and does not become part of yours.

Cause and Effect is related to karma as it means the consequences of our actions. We all want positive karma, not negative, and the same rules apply-so it is essential that we think and act in a good way. All actions and thoughts create energy, and energy fields surround all things including our selves. Another name of our energy field is the aura. Both positive and negative energy stays in our auras and travels with us from one life to another. If you think you have got away with something bad, say a murder or hurting someone wait! It will come back to you and the same will be done to you! Ah! You cannot get away from karma; you may escape the law of the land, yes, but not your karma.

We all have choices, deciding which path to follow and the lessons we wish to learn. No one is squeaky clean. Negative energy is something we all try to avoid, and we certainly don't want it lingering in our auras, lifetime after lifetime.

There is a saying: "What angers you, controls you"...... Anger is a dark red colour in the aura, and can make the aura feel heavy and dull, but at the same time very spiky. Anger causes many dramas and can stop you from moving forward.

Another big negative energy is fear. It is like a heavy grey cloud that sits in the aura and can manifest at many levels. Some people live in constant fear, which prevents them from enjoying life. Fear can hold you back from all you ever want, and prevent you from finding true happiness.

Our worst fear has been that of death and dying, but we never die, we just move on the other lives, perhaps repeating lessons we got wrong or never finished. Some people touch on their past lives by accident or experience them on a regular basis. Letting go of fear can change your whole outlook on life, and the nature of your relationships. To not forgive is another big negative energy. A good place to start is to start forgiving others..

Just imagine negative energies as dark, heavy colours, and positive energies as light, bright colours in our auras - which would you prefer? We all display our karma in our auras, and hopefully we get it cleared by making the right choices.

Cause And Effect Network

-Sreeram Manoj Kumar

Why we are here? To know the answer, we would need to understand the Law of Karma. The key word is 'Why' why do we experience pleasure or pain? Once we know the cause, we could take appropriate action, either to overcome pain or prolong pleasure. The Law of Karma basically tells us the pain and pleasure are on account of prarabdha karma phalas, the fruit of past actions.

There are three kinds of karma. Sanchita or accumulated karma is the sum of all the total fruits, good and bad, obtained during past births. We may find a person who does not care for others and yet living a good life; the present situation that he seems to be enjoying could be for the good deeds done in his past life. If he is troubling his fellow beings in this life he is sure to live a miserable life in his future birth. This is how karma works.

Prarabdha karmas are part of the sanchita karma allotted to us which influences our life in the present incarnation. It cannot be avoided. It is exhausted only by being experienced. And most important is that even Providence has no powers to change what has been allotted, just as a shooter has no control over the arrow that has left his bow.

Agami karmas arise from deeds that would be performed during the course of this life time by an individual, be it good or bad deeds or a mix of both. Remember that the rewards of this are added to the sanchita karma and therefore increase its volume.

There is a small story which emphasises that prarabdha karma is inevitable: Once Lord Yama visits Sriman Narayana in Vaikuntha. At the entrance to his right he finds

Garuda, the vehicle of the Lord who acknowledges him and to the left he sees a small sparrow. Looking at the sparrow Yama makes a surprised gesture and walks inside. The sparrow who sees Yama making a surprised gesture thinks that its time is up and Yama is going take him away to Yamaloka and so it starts trembling in anticipation. Seeing this Garuda tells the sparrow not to worry and that he would help it. Garuda, who could fly at the speed of wind, asks the sparrow to sit on his back and he takes it to the far-off Gandhamadana Mountain near Rameshwaram. He then tells the sparrow not to worry as he would be safe there and gets back to the entranced of Vaikuntha.

After some time Yama comes out and finds the sparrow missing. Garuda, who was proud of what he had done, asks Yama what he was searching for. Yama enquires about the sparrow. Garuda tells him that the sparrow is now far away and safe. Then Yama asks Garuda to tell where he had taken the sparrow to. Garuda tells him he has left the sparrow on the Gandhamadana Mountain. Listening to this Yama is amazed at the intricate design Sriman Narayana has made and tells Garuda that when he came to Vaikuntha he was surprised and wondered how the small sparrow which was supposed to be killed by an eagle on Gandhama

dana in a few minutes would reach there!

Such are the mysterious ways of karma finding ways to make one realise the fruit of action, past or present. Others might say it's sheer coincidence!

* * *

भूलो न ओ३म् नाम रे

–प्रियवीर हेमाइना

कभी न भूलो ओ३म् नाम रे।
शुभ ही शुभ तुम करो काम रे।।

प्रातः को तुम समझो बाल्य–सम
बस दो प्रहर की है जवानी।
तृतीय प्रहर है वृद्धावस्था
प्रतीक शाम–समाप्त कहानी।।

आता लेकर मरण शाम रे।
कभी न भूलो ओ३म् नाम रे।।

हरित डाल पर लगी कली वह
खिलने भी न अभी पाई थी।
खिलते–खिलते ही टूट गई वह
इक ऐसी आँधी आई थी।।

मिला था उजड़ा वह धाम रे।
कभी न भूलो ओ३म् नाम रे।।

क्या इक दिन पूर्व ही सिंहासन
थे नहीं सजा रहे नर–नारी?
दिन निकलते ही हो गई थी
जाने की वन को तैयारी।।

वन चले लखन–सिया–राम रे।
कभी न भूलो ओ३म् नाम रे।।

आर्य राम का अनुराग नित्य
ओ३म् में था करते हुए कृत्य।
किया नियमपूर्वक सन्ध्या–हवन
जब घूम रहे थे वे वन–वन।।

पढ़ो रामायण में राम रे।
कभी न भूलो ओ३म् नाम रे।।

सुन्दरकाण्ड है, इसका प्रमाण
सन्ध्योपासन था सीता–प्राण
ओ३म् ही रहा उसका संबल
ओ३म् का ही रहा उसमें बल।।

तप किये सभी निष्काम रे।
कभी न भूलो ओ३म् नाम रे।।

थे नहीं लक्ष्मण भी पीछे
भक्ति में, साथ राम के दीखे।
सन्ध्योपासन किया नियम से
अनुचर राम के रहे धर्म से।।

हुआ लक्ष्मण भी अमर नाम रे।
कभी न भूलो ओ३म् नाम रे।।

318, विपिन गार्डन
उत्तम नगर, नई दिल्ली–59
मो. 7503070674

RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2011-2013

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा
न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा
नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।। (ऋग् 1/8/6/2)

ऋषि – कुत्स आंगिरसः, देवता–रुद्रः, छन्द जगती

अर्थ– हे (रुद्र) दुष्ट विनाशक ईश्वर! आप हम पर कृपा करें (मा नो महान्तम्) आप हमारे ज्ञानवृद्ध और वयोवृद्ध पिता के समान पूजनीय विद्वानों को नष्ट न करें और (मा नो अर्भकं) हमारे छोटे बालकों और (उक्षन्तम्) युवकों को भी नष्ट मत करो तथा हमारे माता–पिता और प्रिय शरीरों और पुत्रों की भी (मा रीरिषः) हिंसा न करो।

Oh, God, Destroyer of evil, may You not deprive us of our elders in experience and age both. May You not deprive us of our children of tender age! May You not deprive our society of robust men and women capable of raising good progeny. May you not take away fathers and mothers. Oh Lord Merciful may You not cause any affliction to our dear bodies and to the persons who are near and dear to us.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58